

CHAPTER सतहत्तर

कृष्ण द्वारा शाल्व का वध

इस अध्याय में इसका वर्णन है कि भगवान् कृष्ण ने किस तरह मायाजाल के स्वामी, शाल्व का अन्त करके उसके विमान, सौभ को नष्ट कर दिया।

युद्धक्षेत्र से हटाये जाने पर प्रद्युम्न अत्यधिक लज्जित था, अतः उसने अपने सारथी को आज्ञा दी कि वह पुनः द्युमान् के सामने उसके रथ को ले चले। जब प्रद्युम्न द्युमान् से लड़ रहा था, तो गद, सात्यकि तथा साम्ब जैसे यदुवीरों ने शाल्व की सेना में भगदड़ मचा दी। इस तरह यह युद्ध सत्ताइसदि-रात चलता रहा।

जब भगवान् कृष्ण द्वारका लौटे, तो इसे उन्होंने घिरा पाया। उन्होंने तुरन्त दारुक को आज्ञा दी कि वह उन्हें युद्धक्षेत्र ले चले। सहसा शाल्व ने भगवान् को देख लिया और उसने कृष्ण के सारथी पर अपना भाला फेंका, लेकिन भगवान् ने इसको सैकड़ों टुकड़ों में खण्ड-खण्ड कर डाला और शाल्व तथा उसके सौभ-यान को अनेक बाणों से बेध डाला। शाल्व ने बदले में एक तीर छोड़ा, जो कृष्ण की बाईं भुजा में लगा। विचित्र बात यह हुई कि इस हाथ से पकड़ा हुआ उनका शार्ङ्ग धनुष गिर पड़ा। इस तरह धनुष को गिरते देखकर युद्ध देख रहे देवतागण इसे संकट का संकेत समझ कर चिल्ला पड़े, किन्तु शाल्व ने इस अवसर का उपयोग कृष्ण को अपमानित करने के लिए किया।

तब कृष्ण ने अपनी गदा से शाल्व पर प्रहार तो किया, लेकिन वह असुर रक्त वमन करता हुआ अदृश्य हो गया। एक क्षण के पश्चात् कृष्ण के समक्ष एक व्यक्ति आया और प्रणाम करने के बाद अपना परिचय देवकी माता के दूत के रूप में दिया। उस व्यक्ति ने भगवान् को जानकारी दी कि उनके पिता वसुदेव का अपहरण शाल्व ने कर लिया है। यह सुनकर भगवान् कृष्ण सामान्य व्यक्ति की भाँति शोक करते प्रतीत होने लगे। तब शाल्व वसुदेव जैसे ही एक व्यक्ति को आगे करके आता दिखा। उसने उसका सिर काटकर अपने सौभ विमान में रख लिया। किन्तु भगवान् कृष्ण शाल्व की जादूगरी की चाल समझ गये। अतः उन्होंने शाल्व को बाणों की बौछार से बेध डाला और सौभ-यान पर अपनी गदा का प्रहार करके उसे नष्ट कर दिया। शाल्व अपने विमान से उतर कर कृष्ण पर आक्रमण करने के लिए लपका, किन्तु भगवान् ने अपना सुदर्शन चक्र उठाया और शाल्व का सिर काट लिया।

शाल्व के मरते समय देवताओं ने हर्ष से आकाश में दुन्दुभियाँ बजाईं। तब उसके मित्र दन्तव्रक ने शाल्व की मृत्यु का बदला लेने का प्रण किया।

श्रीशुक उवाच

स उपस्पृश्य सलिलं दंशितो धृतकार्मुकः ।

नय मां द्युमतः पार्श्वं वीरस्येत्याह सारथिम् ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; सः—वह (प्रद्युम्न); उपस्पृश्य—छूकर; सलिलम्—जल; दंशितः—अपना कवच पहन कर; धृत—धारण करके; कार्मुकः—अपना धनुष; नय—ले चलो; माम्—मुझे; द्युमतः—द्युमान् के; पार्श्वम्—पास; वीरस्य—वीर के; इति—इस प्रकार; आह—बोला; सारथिम्—अपने रथचालक से।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : जल से अपने को तरोताजा करने के बाद, अपना कवच पहन कर तथा अपना धनुष लेकर भगवान् प्रद्युम्न ने अपने सारथी से कहा, “मुझे वहीं वापस ले चलो, जहाँ वीर द्युमान् खड़ा है।”

तात्पर्य : प्रद्युम्न अपनी इस त्रुटि को सुधारना चाह रहे थे कि उनके बेहोश होने पर उनका सारथी उन्हें युद्धभूमि से हटा कर ले आया था।

विधमन्तं स्वसैन्यानि द्युमन्तं रुक्मिणीसुतः ।

प्रतिहत्य प्रत्यविध्यान्नाराचैरष्टभिः स्मयन् ॥ २ ॥

शब्दार्थ

विधमन्तम्—तहस-नहस करके; स्व—अपने; सैन्यानि—सैनिकों को; द्युमन्तम्—द्युमान् को; रुक्मिणी-सुतः—रुक्मिणी-पुत्र (प्रद्युम्न); प्रतिहत्य—उलट कर आक्रमण करके; प्रत्यविध्यात्—उलट कर वार किया; नाराचैः—लोह के बने विशेष बाणों से; अष्टभिः—आठ; स्मयन्—हँसते हुए।

प्रद्युम्न की अनुपस्थिति में द्युमान् उसकी सेना को तहस-नहस किये जा रहा था, किन्तु अब प्रद्युम्न ने द्युमान् पर बदले में आक्रमण कर दिया और हँसते हुए आठ नाराच बाणों से उसे बेध दिया।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती की टीका है कि प्रद्युम्न ने द्युमान् को यह कहकर ललकारा, “अब जरा मुझे मार कर देखो!” यह कहकर तथा द्युमान् को अस्त्र चलाने का अवसर देकर प्रद्युम्न ने अपने घातक बाण छोड़े।

चतुर्भिश्चतुरो वाहान्सूतमेकेन चाहन्त् ।

द्वाभ्यं धनुश्च केतुं च शरेणान्येन वै शिरः ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

चतुर्भिः—चार (बाणों) से; चतुरः—चार; वाहान्—सवारियों को; सूतम्—सारथी को; एकेन—एक से; च—तथा; अहनत्—मारा; द्वाभ्याम्—दो से; धनुः—धनुष; च—तथा; केतुम्—झंडे को; च—तथा; शरेण—बाण से; अन्येन—दूसरे; वै—निस्सन्देह; शिरः—सिर।

इन बाणों में से चार से उसने द्युमान् के चार घोड़ों को, एक बाण से उसके सारथी को तथा दो अन्य बाणों से उसके धनुष तथा रथ के झंडे को और अन्तिम बाण से द्युमान् के सिर पर प्रहार किया।

गदसात्यकिसाम्बाद्या जघ्नुः सौभपतेर्बलम् ।

पेतुः समुद्रे सौभेयाः सर्वे सञ्छिन्नकन्धराः ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

गद-सात्यकि-साम्ब-आद्याः—गद, सात्यकि, साम्ब तथा अन्यो ने; जघ्नुः—मार डाला; सौभ-पतेः—सौभ के स्वामी (शाल्व) की; बलम्—सेना को; पेतुः—वे गिर पड़े; समुद्रे—समुद्र में; सौभेयाः—सौभ के भीतर खड़े हुए; सर्वे—सारे लोग; सञ्छिन्न—कटी हुई; कन्धराः—गर्दनों वाले।

गद, सात्यकि, साम्ब तथा अन्य वीर शाल्व की सेना का संहार करने लगे और इस तरह विमान के भीतर के सारे सिपाही गर्दनों कट जाने से समुद्र में गिरने लगे।

एवं यदूनां शाल्वानां निघ्नतामितरेतरम् ।

युद्धं त्रिनवरात्रं तदभूत्तुमुलमुल्बणम् ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; यदूनाम्—यदुओं के; शाल्वानाम्—तथा शाल्व के अनुयायियों के; निघ्नताम्—प्रहार करते हुए; इतर-इतरम्—एक-दूसरे पर; युद्धम्—युद्ध; त्रि—तीन बार; नव—नौ; रात्रम्—रातों तक; तत्—वह; अभूत्—था; तुमुलम्—घनघोर; उल्बणम्—भयावना।

इस तरह यदुगण तथा शाल्व के अनुयायी एक-दूसरे पर आक्रमण करते रहे और यह घनघोर भयानक युद्ध सत्ताईस दिनों तथा रातों तक चलता रहा।

इन्द्रप्रस्थं गतः कृष्ण आहूतो धर्मसूनुना ।

राजसूयेऽथ निवृत्ते शिशुपाले च संस्थिते ॥ ६ ॥

कुरुवृद्धाननुज्ञाप्य मुनींश्च ससुतां पृथाम् ।

निमित्तान्यतिघोराणि पश्यन्द्वारवतीं ययौ ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

इन्द्रप्रस्थम्—पाण्डवों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ को; गतः—गये हुए; कृष्णः—भगवान् कृष्ण; आहूतः—बुलाये गये; धर्म-सूनुना—साक्षात् धर्म, यमराज, के पुत्र (राजा युधिष्ठिर) द्वारा; राजसूये—राजसूय यज्ञ में; अथ—तब; निवृत्ते—पूर्ण होने पर; शिशुपाले—शिशुपाल के; च—और; संस्थिते—मारे जाने पर; कुरु-वृद्धान्—कुरुवंश के बड़े-बूढ़ों से; अनुज्ञाप्य—विदा

लेकर; मुनीन्—मुनियों से; च—तथा; स—सहित; सुताम्—पुत्रों (पाण्डवगण) को; पृथाम्—रानी कुन्ती को; निमित्तानि—अपशकुन; अति—अत्यन्त; घोराणि—भयानक; पश्यन्—देखते हुए; द्वारवतीम्—द्वारका; ययौ—चले गये।

धर्म-पुत्र युधिष्ठिर द्वारा आमंत्रित किये जाने पर भगवान् कृष्ण इन्द्रप्रस्थ गये हुए थे। अब जब राजसूय यज्ञ पूरा हो चुका था और शिशुपाल मारा जा चुका था, तो भगवान् को अपशकुन दिखने लगे। अतः उन्होंने कुरुवंशी बड़े-बूढ़ों तथा महान् ऋषियों से एवं अपनी बुआ—पृथा तथा उनके पुत्रों से भी विदा ली और द्वारका लौट आये।

आह चाहमिहायात आर्यमिश्राभिसङ्गतः ।

राजन्याश्चैद्यपक्षीया नूनं हन्युः पुरीं मम ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

आह—उन्होंने कहा; च—तथा; अहम्—मैं; इह—इस स्थान में (इन्द्रप्रस्थ); आयातः—आया हुआ; आर्य—मेरे अग्रज (बलराम); मिश्र—प्रसिद्ध पुरुष; अभिसङ्गतः—साथ में; राजन्याः—राजा; चैद्य-पक्षीयाः—चैद्य (शिशुपाल) के पक्षधर; नूनम्—निश्चय ही; हन्युः—आक्रमण कर रहे होंगे; पुरीम्—नगरी; मम—मेरी।

भगवान् ने अपने आप (मन ही मन) कहा : चूँकि मैं यहाँ अपने पूज्य ज्येष्ठ भ्राता सहित आया हूँ, शिशुपाल के पक्षधर राजा निश्चित ही मेरी राजधानी पर आक्रमण कर रहे होंगे।

वीक्ष्य तत्कदनं स्वानां निरूप्य पुररक्षणम् ।

सौभं च शाल्वराजं च दारुकं प्राह केशवः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

वीक्ष्य—देखकर; तत्—वह; कदनम्—विनाश; स्वानाम्—अपने व्यक्तियों का; निरूप्य—व्यवस्था करके; पुर—पुरी का; रक्षणम्—रक्षा के लिए; सौभम्—सौभ-यान; च—तथा; शाल्व-राजम्—शाल्व प्रदेश का राजा; च—तथा; दारुकम्—अपने सारथी दारुक से; प्राह—बोले; केशवः—भगवान् कृष्ण।

[शुकदेव गोस्वामी ने कहा] : द्वारका पहुँचने पर, उन्होंने देखा कि लोग किस तरह विनाश से भयभीत हैं और शाल्व तथा उसके सौभ विमान को भी देखा, तो केशव ने नगरी की सुरक्षा के लिए आयोजना की और फिर दारुक से निम्नवत् बोले।

तात्पर्य : भगवान् कृष्ण ने श्री बलराम को नगरी की सुरक्षा करने के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान पर तैनात कर दिया और श्री रुक्मिणी तथा अन्तःपुर की अन्य रानियों के लिए विशेष रक्षक नियुक्त कर दिया। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती के अनुसार विशिष्ट सैनिक गुप्त रास्ते से रानियों को द्वारका के भीतर सुरक्षित स्थान पर सकुशल ले गये।

रथं प्रापय मे सूत शाल्वस्यान्तिकमाशु वै ।
सम्भ्रमस्ते न कर्तव्यो मायावी सौभराडयम् ॥ १० ॥

शब्दार्थ

रथम्—रथ को; प्रापय—लाओ; मे—मेरे; सूत—हे सारथी; शाल्वस्य—शाल्व के; अन्तिकम्—निकट; आशु—तेजी से; वै—निस्सन्देह; सम्भ्रमः—मोह; ते—तुम्हारे द्वारा; न कर्तव्यः—अनुभव नहीं होना चाहिए; माया-वी—महान् जादूगर; सौभ-राट्—सौभ का स्वामी; अयम्—यह ।

[भगवान् कृष्ण ने कहा] : हे सारथी, शीघ्र ही मेरा रथ शाल्व के निकट ले चलो। यह सौभ-पति शक्तिशाली जादूगर है, तुम उससे विमोहित नहीं होना।

इत्युक्तश्चोदयामास रथमास्थाय दारुकः ।
विशन्तं ददृशुः सर्वे स्वे परे चारुणानुजम् ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

इति—इस प्रकार; उक्तः—कहा गया; चोदयाम् आस—आगे बढ़ाया; रथम्—रथ को; आस्थाय—नियंत्रण अपने हाथ में लेकर; दारुकः—दारुक ने; विशन्तम्—घुसते हुए; ददृशुः—देखा; सर्वे—सबों के; स्वे—अपने; परे—विपक्षी दल में; च—भी; अरुण-अनुजम्—अरुण के छोटे भाई (गरुड़, जो कृष्ण की ध्वजा में थे) को ।

इस तरह आदेश दिये जाने पर दारुक ने भगवान् के रथ की रास सँभाली और उसे आगे हाँका। ज्योंही रथ युद्धभूमि में प्रविष्ट हुआ, तो वहाँ पर उपस्थित शत्रु तथा मित्र हर एक की गरुड़ के प्रतीक की ओर दृष्टि पड़ी।

शाल्वश्च कृष्णमालोक्य हतप्रायबलेश्वरः ।
प्राहरत्कृष्णासूतय शक्तिं भीमरवां मृधे ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

शाल्वः—शाल्व ने; च—तथा; कृष्णम्—कृष्ण को; आलोक्य—देखकर; हत—नष्ट; प्राय—लगभग; बल—सेना का; ईश्वरः—स्वामी; प्राहरत्—उसने चलाया; कृष्ण-सूतय—कृष्ण के सारथी पर; शक्तिम्—अपना भाला; भीम—डरावना; रवाम्—गर्जन की ध्वनि; मृधे—युद्धस्थल में ।

जब नष्ट-प्राय सेना के स्वामी शाल्व ने कृष्ण को पास आते देखा, तो उसने भगवान् के सारथी पर अपना भाला फेंका। यह भाला युद्धभूमि में से होकर उड़ते समय भयावह गर्जना कर रहा था।

तामापतन्तीं नभसि महोल्कामिव रंहसा ।
भासयन्तीं दिशः शौरिः सायकैः शतधाच्छिनत् ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

ताम्—उसको; आपतन्तीम्—उड़ते हुए; नभसि—आकाश में; महा—महान्; उल्काम्—टूटता तारा; इव—सदृश; रंहसा—तेजी से; भासयन्तीम्—प्रकाश करते हुए; दिशः—दिशाओं को; शौरिः—भगवान् कृष्ण ने; सायकैः—बाणों से; शतथा—सैकड़ों खण्डों में; अच्छिनत्—काट दिया।

शाल्व द्वारा फेंके गये भाले ने सारे आकाश को अत्यन्त तेजवान् उल्का तारे की तरह प्रकाशित कर दिया, किन्तु भगवान् शौरि ने अपने बाणों से इस महान् अस्त्र को सैकड़ों खण्डों में छिन्न-भिन्न कर डाला।

तं च षोडशभिर्विद्ध्वा बानैः सौभं च खे भ्रमत् ।

अविध्यच्छरसन्दोहैः खं सूर्य इव रश्मिभिः ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

तम्—उसको, शाल्व को; च—तथा; षोडशभिः—सोलह; विद्ध्वा—बेध कर; बाणैः—बाणों से; सौभम्—सौभ को; च—भी; खे—आकाश में; भ्रमत्—धूमते हुए; अविध्यत्—प्रहार किया; शर—बाणों से; सन्दोहैः—मूसलाधार वर्षा से; खम्—आकाश को; सूर्यः—सूर्य; इव—सदृश; रश्मिभिः—अपनी किरणों से।

तब भगवान् कृष्ण ने शाल्व को सोलह बाणों से बेध दिया तथा आकाश में इधर-उधर धूमते हुए सौभ विमान पर बाणों की वर्षा से प्रहार किया। बाणों की वर्षा करते हुए भगवान् उस सूर्य की तरह लग रहे थे, जो अपनी किरणों से आकाश को आप्लावित करता है।

शाल्वः शौरैस्तु दोः सव्यं सशार्ङ्गं शार्ङ्गधन्वनः ।

बिभेद न्यपतद्भस्ताच्छार्ङ्गमासीत्तदद्भुतम् ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

शाल्वः—शाल्व; शौरैः—भगवान् कृष्ण के; तु—लेकिन; दोः—बाहु; सव्यम्—बाईं; स—सहित; शार्ङ्गम्—भगवान् का धनुष, जो शार्ङ्ग कहलाता है; शार्ङ्गधन्वनः—शार्ङ्गधन्वा कहलाने वाले; बिभेद—प्रहार किया; न्यपतत्—गिर पड़ा; हस्तात्—हाथ से; शार्ङ्गम्—शार्ङ्ग धनुष; असीत्—था; तत्—यह; अद्भुतम्—विचित्र।

तब शाल्व ने भगवान् कृष्ण की बाईं बाँह पर प्रहार किया, जिसमें वे अपना शार्ङ्ग धनुष पकड़े थे। विचित्र बात यह हुई कि यह धनुष उनके हाथ से गिर गया।

हाहाकारो महानासीद्भूतानां तत्र पश्यताम् ।

निनद्य सौभराडुच्चैरिदमाह जनार्दनम् ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

हाहा-कारः—निराशा की चिल्लाहट; महान्—अत्यधिक; आसीत्—हुई; भूतानाम्—जीवों में; तत्र—वहाँ; पश्यताम्—देख रहे; निनद्य—गरजकर; सौभ-राट्—सौभ के स्वामी ने; उच्चैः—तेजी से; इदम्—यह; आह—कहा; जनार्दनम्—कृष्ण से।

जो यह घटना देख रहे थे, वे सब हाहाकार करने लगे। तब सौभ के स्वामी ने जोर-जोर से गरजकर जनार्दन से इस प्रकार कहा।

यत्त्वया मूढ नः सख्युर्भ्रातुर्भार्या हतेक्षताम् ।
 प्रमत्तः स सभामध्ये त्वया व्यापादितः सखा ॥ १७ ॥
 तं त्वाद्य निशितैर्बाणैरपराजितमानिनम् ।
 नयाम्यपुनरावृत्तिं यदि तिष्ठेर्ममाग्रतः ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

यत्—चूँकि; त्वया—तुम्हारे द्वारा; मूढ—हे मूर्ख; नः—हमारे; सख्युः—मित्र (शिशुपाल) की; भ्रातुः—(अपने) भाई की;
 भार्या—पत्नी; हता—हरण की गई; ईक्षताम्—हमारे देखते-देखते; प्रमत्तः—लापरवाह; सः—वह, शिशुपाल; सभा—
 (राजसूय यज्ञ की) सभा; मध्ये—में; त्वया—तुम्हारे द्वारा; व्यापादितः—मारा गया; सखा—मेरा मित्र; तम् त्वा—वही तुम;
 अद्य—आज; निशितैः—तीक्ष्ण; बाणैः—बाणों से; अपराजित—न जीता जा सकने वाला; मानिनम्—माने वाले; नयामि—
 भेज दूँगा; अपुनः—आवृत्तिम्—ऐसे लोक में जहाँ से लौटना नहीं होगा; यदि—यदि; तिष्ठेः—तुम खड़े होगे; मम—मेरे;
 अग्रतः—सामने।

[शाल्व ने कहा] : रे मूर्ख! चूँकि हमारी उपस्थिति में तुमने हमारे मित्र और अपने ही भाई शिशुपाल की मंगेलर का अपहरण किया है और उसके बाद जब वह सतर्क नहीं था, तो पवित्र सभा में तुमने उसकी हत्या कर दी है, इसलिए आज मैं अपने तेज बाणों से तुम्हें ऐसे लोक में भेज दूँगा, जहाँ से लौटना नहीं होता। यद्यपि तुम अपने को अपराजेय मानते हो, किन्तु यदि तुम मेरे समक्ष खड़े होने का साहस करो, तो मैं तुम्हें अभी मार डालूँगा।

श्रीभगवानुवाच

वृथा त्वं कथसे मन्द न पश्यस्यन्तिकेऽन्तकम् ।
 पौरुसं दर्शयन्ति स्म शूरा न बहुभाषिणः ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

श्री-भगवान् उवाच—भगवान् ने कहा; वृथा—व्यर्थ ही; त्वम्—तुम; कथसे—डींग मारते हो; मन्द—हे मूर्ख; न पश्यसि—नहीं देख रहे; अन्तिके—निकट; अन्तकम्—मृत्यु; पौरुषम्—अपना पराक्रम; दर्शयन्ति—दिखलाते हैं; स्म—निस्सन्देह; शूराः—
 बहादुर जन; न—नहीं; बहु—अधिक; भाषिणः—बोलने वाले।

भगवान् ने कहा : रे मूर्ख! तुम व्यर्थ ही डींग मार रहे हो, क्योंकि तुम अपने निकट खड़ी मृत्यु को देख नहीं पा रहे हो। असली वीर कभी अधिक बातें नहीं करते, अपितु कार्य करके अपना पौरुष प्रदर्शित करते हैं।

इत्युक्त्वा भगवाञ्छाल्वं गदया भीमवेगया ।
 तताड जत्रौ संरब्धः स चकम्पे वमन्नसृक् ॥ २० ॥

शब्दार्थ

इति—इस प्रकार; उक्त्वा—कह कर; भगवान्—भगवान् ने; शाल्वम्—शाल्व को; गदया—अपनी गदा से; भीम—भयानक; वेगया—वेग से; तताड—प्रहार किया; जत्रौ—कंधे की हड्डी पर; संरब्धः—क्रुद्ध; सः—वह; चकम्पे—काँप उठा; वमन्—कै करता; असृक्—रक्त।

ऐसा कह कर क्रुद्ध हुए भगवान् ने भयावनी शक्ति तथा अत्यन्त वेग से अपनी गदा घुमाई और उसे शाल्व के कंधे की हड्डी पर दे मारा, जिससे वह छटपटा उठा और रक्त वमन करने लगा।

गदायां सन्निवृत्तायां शाल्वस्त्वन्तरधीयत ।
ततो मुहूर्त आगत्य पुरुषः शिरसाच्युतम् ।
देवक्या प्रहितोऽस्मीति नत्वा प्राह वचो रुदन् ॥ २१ ॥

शब्दार्थ

गदायाम्—गदा के; सन्निवृत्तायाम्—वापस आ जाने पर; शाल्वः—शाल्व; तु—लेकिन; अन्तरधीयत—अदृश्य हो गया; ततः—तब; मुहूर्ते—क्षण-भर में; आगत्य—आकर; पुरुषः—व्यक्ति; शिरसा—अपने सिर से; अच्युतम्—भगवान् कृष्ण को; देवक्या—माता देवकी द्वारा; प्रहितः—भेजा गया; अस्मि—हूँ; इति—ऐसा कहते हुए; नत्वा—नमन करके; प्राह—बोला; वचः—ये शब्द; रुदन्—रोते हुए।

लेकिन भगवान् अच्युत द्वारा अपनी गदा वापस लेते ही शाल्व दृष्टि से ओझल हो गया और उसके एक पल बाद एक व्यक्ति भगवान् के पास आया। उनके समक्ष नतमस्तक होकर उसने कहा, “मुझे देवकी ने भेजा है” और रोते हुए उसने निम्नलिखित शब्द कहे।

कृष्ण कृष्ण महाबाहो पिता ते पितृवत्सल ।
बद्ध्वापनीतः शाल्वेन सौनिकेन यथा पशुः ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

कृष्ण कृष्ण—हे कृष्ण, हे कृष्ण; महा-बाहो—हे बलशाली भुजाओं वाले; पिता—पिता; ते—तुम्हारा; पितृ—अपने माता-पिता के; वत्सल—हे प्रिय; बद्ध्वा—बाँध करके; अपनीतः—ले जाये गये; शाल्वेन—शाल्व द्वारा; सौनिकेन—कसाई द्वारा; यथा—जिस तरह; पशुः—घरेलू पशु।

[उस व्यक्ति ने कहा] : हे कृष्ण, हे कृष्ण, हे महाबाहु, हे अपने माता-पिता के प्रिय, शाल्व तुम्हारे पिता को बाँध कर उसी तरह ले गया है, जिस तरह कसाई किसी पशु का वध करने के लिए ले जाता है।

निशाम्य विप्रियं कृष्णो मानुसीं प्रकृतिं गतः ।
विमनस्को घृणी स्नेहाद्बभाषे प्राकृतो यथा ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

निशम्य—सुनकर; विप्रियम्—क्षुब्ध करने वाले शब्दों को; कृष्णः—भगवान् कृष्ण ने; मानुषीम्—मनुष्य की तरह; प्रकृतिम्—स्वभाव; गतः—बनाकर; विमनस्कः—दुखी; घृणी—करुणापूर्ण; स्नेहात्—स्नेह के वशीभूत; बभाषे—बोले; प्राकृतः—सामान्य व्यक्ति; यथा—जिस तरह।

जब उन्होंने यह क्षुब्धकारी समाचार सुना, तो सामान्य मनुष्य की भूमिका निर्वाह कर रहे भगवान् कृष्ण ने खेद तथा करुणा व्यक्त की और अपने माता-पिता के प्रति प्रेमवश उन्होंने सामान्य बद्धजीव जैसे शब्द कहे।

कथं राममसम्भ्रान्तं जित्वाजेयं सुरासुरैः ।

शाल्वेनाल्पीयसा नीतः पिता मे बलवान्विधिः ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

कथम्—किस तरह; रामम्—बलराम को; असम्भ्रान्तम्—विचलित न होने वाले; जित्वा—जीत कर; अजेयम्—अजेय; सुर—देवताओं द्वारा; असुरैः—तथा असुरों द्वारा; शाल्वेन—शाल्व द्वारा; अल्पीयसा—अत्यल्प; नीतः—ले जाया गया; पिता—पिता; मे—मेरा; बल-वान्—शक्तिशाली; विधिः—भाग्य।

[भगवान् कृष्ण ने कहा] : “बलराम सदैव सतर्क रहने वाले हैं और कोई देवता या असुर उन्हें पराजित नहीं कर सकता। तो यह क्षुद्र शाल्व किस तरह उन्हें पराजित करके मेरे पिता का अपहरण कर सकता है? निस्सन्देह, भाग्य सर्वशक्तिमान होता है।”

इति ब्रुवाणे गोविन्दे सौभराट्प्रत्युपस्थितः ।

वसुदेवमिवानीय कृष्णं चेदमुवाच सः ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

इति—इस प्रकार; ब्रुवाणे—कहते हुए; गोविन्दे—कृष्ण के; सौभ-राट्—सौभ का स्वामी (शाल्व); प्रत्युपस्थितः—आगे आया; वसुदेवम्—कृष्ण के पिता वसुदेव; इव—सदृश; आनीय—आगे करके; कृष्णम्—कृष्ण से; च—तथा; इदम्—यह; उवाच—कहा; सः—उसने।

जब गोविन्द ये शब्द कह चुके, तो भगवान् के समक्ष वसुदेव जैसे दिखने वाले किसी पुरुष को लेकर सौभ-पति पुनः प्रकट हुआ। तब शाल्व ने इस प्रकार कहा।

एष ते जनिता तातो यदर्थमिह जीवसि ।

वधिष्ये वीक्षतस्तेऽमुमीशश्चेत्पाहि बालिश ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

एषः—यह; ते—तुम्हारा; जनिता—जन्म देने वाला पिता; तातः—प्रिय; यत्-अर्थम्—जिसके लिए; इह—इस जगत में; जीवसि—तुम जीवित हो; वधिष्ये—मैं मार डालूँगा; वीक्षतः ते—तुम्हारे देखते-देखते; अमुम्—उसको; ईशः—समर्थ; चेत्—यदि; पाहि—उसकी रक्षा करो; बालिश—रे मूर्ख।

[शाल्व ने कहा] : यह रहा तुम्हें जन्म देने वाला तुम्हारा पिता, जिसके लिए तुम इस जगत

में जीवित हो। अब मैं तुम्हारी आँखों के सामने इसका वध कर दूँगा। रे मूर्ख! यदि तुम इसे बचा सको तो बचाओ।

एवं निर्भर्त्स्य मायावी खड्गेनानकदुन्दुभेः ।

उत्कृत्य शिर आदाय खस्थं सौभं समाविशत् ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; निर्भर्त्स्य—मजाक उड़ाते हुए; माया-वी—जादूगर; खड्गेन—अपनी तलवार से; आनकदुन्दुभेः—श्री वसुदेव का; उत्कृत्य—काट कर; शिरः—सिर; आदाय—लेकर; ख—आकाश में; स्थम्—स्थित; सौभम्—सौभ में; समाविशत्—घुस गया।

इस प्रकार भगवान् की हँसी उड़ा कर जादूगर शाल्व अपनी तलवार से वसुदेव का सिर काटता हुआ प्रतीत हुआ। वह उस सिर को अपने साथ लेकर आकाश में मँडरा रहे सौभ यान में घुस गया।

ततो मुहूर्तं प्रकृतावुपप्लुतः

स्वबोध आस्ते स्वजनानुषङ्गतः ।

महानुभावस्तदबुध्यदासुरीं

मायां स शाल्वप्रसृतां मयोदिताम् ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

ततः—तब; मुहूर्तम्—एक क्षण के लिए; प्रकृतौ—सामान्य (मानव) स्वभाव में; उपप्लुतः—लीन; स्व-बोधः—(यद्यपि) पूर्णतया आत्मबोध से युक्त; आस्ते—रहा; स्व-जन—अपने प्रियजनों के लिए; अनुषङ्गतः—स्नेह के कारण; महा-अनुभावः—अनुभूति की महान् शक्ति का स्वामी; तत्—वह; अबुध्यत्—पहचान लिया; आसुरीम्—असुरों से सम्बद्ध; मायाम्—मोहक जादू; सः—वह; शाल्व—शाल्व द्वारा; प्रसृताम्—काम में लाई हुई; मय—मय दानवद्वारा; उदिताम्—विकसित।

भगवान् कृष्ण स्वभाव से ही ज्ञान से परिपूर्ण हैं और उनमें असीम अनुभूति की शक्ति है। तो भी प्रियजनों के प्रति महान् स्नेहवश एक क्षण के लिए वे सामान्य प्राणी की मुद्रा में लीन हो गये। लेकिन उन्हें तुरन्त ही स्मरण हो आया कि यह तो मय दानव द्वारा सृजित आसुरी माया है, जिसे शाल्व काम में ला रहा है।

न तत्र दूतं न पितुः कलेवरं

प्रबुद्ध आजौ समपश्यदच्युतः ।

स्वाप्नं यथा चाम्बरचारिणं रिपुं

सौभस्थमालोक्य निहन्तुमुद्यतः ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

न—नहीं; तत्र—वहाँ; दूतम्—सन्देशवाहक; न—न तो; पितुः—पिता का; कलेवरम्—शरीर; प्रबुद्धः—सतर्क; आजौ—युद्धभूमि में; समपश्यत्—देखा; अच्युतः—भगवान् कृष्ण ने; स्वाप्नम्—स्वप्न में; यथा—जिस तरह; च—तथा; अम्बर—आकाश में; चारिणम्—विचरण करते हुए; रिपुम्—शत्रु (शाल्व) को; सौभ-स्थम्—सौभ यान में बैठा हुआ; आलोक्य—देखकर; निहन्तुम्—मारने के लिए; उद्यतः—तैयार।

अब असली परिस्थिति के प्रति सतर्क भगवान् अच्युत ने अपने समक्ष युद्धभूमि में न तो दूत को देखा न अपने पिता के शरीर को। ऐसा लग रहा था, मानो वे स्वप्न से जागे हों। तब अपने शत्रु को अपने ऊपर सौभ-यान में उड़ता देखकर भगवान् ने उसे मार डालने की ठानी।

एवं वदन्ति राजर्षे ऋषयः के च नान्विताः ।

यत्स्ववाचो विरुध्येत नूनं ते न स्मरन्त्युत ॥ ३० ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; वदन्ति—कहते हैं; राज-ऋषे—हे राजर्षि (परीक्षित); ऋषयः—ऋषिगण; के च—कुछ; न—नहीं; अन्विताः—सही ढंग से तर्क करते हुए; यत्—चूँकि; स्व—अपने; वाचः—शब्द; विरुध्येत—विपरीत हो जाते हैं; नूनम्—निश्चय ही; ते—वे; न स्मरन्ति—स्मरण नहीं करते; उत—निस्सन्देह।

हे राजर्षि, यह विवरण कुछ ऋषियों द्वारा दिया हुआ है, किन्तु जो इस तरह अतार्किक ढंग से बोलते हैं, वे अपने ही पूर्ववर्ती कथनों को भुला कर अपनी ही बात काटते हैं।

तात्पर्य : यदि कोई यह सोचता है कि कृष्ण सचमुच ही शाल्व के जादू से मोहग्रस्त हो गये और सामान्य जन की तरह शोक कर रहे थे, तो ऐसा मत अतार्किक एवं विपरीतार्थी है, क्योंकि यह सर्वविदित है कि कृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं, दिव्य हैं और परम पूर्ण हैं। इसकी और अधिक व्याख्या अगले श्लोकों में है।

क्व शोकमोहौ स्नेहो वा भयं वा येऽज्ञसम्भवाः ।

क्व चाखण्डितविज्ञानज्ञानैश्वर्यस्त्वखण्डितः ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

क्व—कहाँ; शोक—शोक; मोहौ—तथा मोह; स्नेहः—भौतिक स्नेह; वा—अथवा; भयम्—भय; वा—अथवा; ये—जो; अज्ञा—अज्ञानवश; सम्भवाः—उत्पन्न; क्व च—और कहाँ, दूसरी ओर; अखण्डित—अनन्त; विज्ञान—जिनकी अनुभूति; ज्ञान—ज्ञान; ऐश्वर्यः—तथा शक्ति; तु—लेकिन; अखण्डितः—अनन्त भगवान्।

भला शोक, मोह, स्नेह या भय, जो कि अज्ञानजनित हैं, किस तरह से अनन्त भगवान् को प्रभावित कर सकते हैं, जिनकी अनुभूति, ज्ञान तथा शक्ति—सारे के सारे भगवान् की तरह ही अनन्त हैं?

तात्पर्य : श्रील प्रभुपाद लिखते हैं, “शोक, संताप तथा मोह तो बद्धजीवों के लक्षण हैं, किन्तु

भला ऐसी बातें परम पुरुष को किस तरह प्रभावित कर सकती हैं, जो ज्ञान, शक्ति एवं समस्त ऐश्वर्य से परिपूर्ण हैं? वास्तव में, यह बिल्कुल सम्भव नहीं है कि भगवान् कृष्ण शाल्व के योगमय जादूगरी से गुमराह हो गये हों। वे तो मनुष्य लीला कर रहे थे।”

भागवत के सारे महान् टीकाकार इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि शोक, मोह, आसक्ति तथा भय—जो कि जीव के अज्ञान से उत्पन्न हैं, कभी भी भगवान् की दिव्य लीलाओं में उपस्थित नहीं रह सकते। श्रील रूप गोस्वामी ने इस बात को समझाने के लिए कृष्ण की लीलाओं से अनेक उदाहरण दिये हैं। उदाहरणार्थ, जब ग्वालबाल अघासुर के मुँह में चले गये थे, तो कृष्ण को ऊपरी आश्चर्य हुआ था। इसी तरह जब ब्रह्माजी कृष्ण के ग्वालमित्रों तथा बछड़ों को ले गये थे, तो भगवान् पहले तो उन सबकी खोज करते रहे, मानो वे जानते ही न हों कि वे सब कहाँ हैं? इस तरह भगवान् सामान्य मनुष्य की भूमिका अदा करते हैं, ताकि वे अपने भक्तों के साथ दिव्य लीलाओं का आस्वादन कर सकें। मनुष्य को चाहिए कि कभी भी वह भगवान् को सामान्य व्यक्ति न माने, जैसाकि शुकदेव गोस्वामी इस श्लोक में तथा इसके आगे के श्लोकों में बतलाते हैं।

यत्पादसेवोर्जितयात्मविद्यया

हिन्वन्त्यनाद्यात्मविपर्ययग्रहम् ।

लभन्त आत्मीयमनन्तमैश्वरं

कुतो नु मोहः परमस्य सद्गतेः ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

यत्—जिसके; पाद—पैरों की; सेवा—सेवा करने से; ऊर्जितया—सशक्त बना हुआ; आत्म-विद्यया—आत्म-साक्षात्कार द्वारा; हिन्वन्ति—दूर कर देते हैं; अनादि—जिसका आदि न हो; आत्म—आत्मा की; विपर्यय-ग्रहम्—गलत पहचान; लभन्ते—प्राप्त करते हैं; आत्मीयम्—उनके साथ निजी सम्बन्ध में; अनन्तम्—नित्य; ऐश्वर्यम्—कीर्ति; कुतः—कैसे; नु—निस्सन्देह; मोहः—मोह; परमस्य—ब्रह्म के; सत्—सन्त-भक्तों का; गतेः—गन्तव्य।

भगवान् के भक्तगण भगवान् के चरणों पर की गई सेवा से प्रबलित आत्म-साक्षात्कार के कारण देहात्मबुद्धि को दूर कर देते हैं, जो अनन्त काल से आत्मा को मोहग्रस्त करती रही है। इस तरह वे उनकी निजी संगति में नित्य कीर्ति प्राप्त करते हैं। तब भला वे परम सत्य, जो कि समस्त विशुद्ध सन्तों के गन्तव्य हैं, मोह के वशीभूत कैसे हो सकते हैं?

तात्पर्य : उपवास करने से शरीर कमजोर हो जाता है और मनुष्य सोचता है कि मैं क्षीण हो गया हूँ। इसी तरह कभी कभी बद्धजीव सोचता है कि मैं सुखी हूँ या दुखी हूँ—ये देहात्मबुद्धि पर आधारित

विचार हैं। किन्तु भगवान् कृष्ण के चरणकमलों की सेवा करके ही भक्तगण देहात्मबुद्धि से मुक्त हो जाते हैं। तो फिर भगवान् को ऐसा मोह किसी भी समय कैसे प्रभावित कर सकता है ?

तं शस्त्रपूगैः प्रहरन्तमोजसा

शाल्वं शरैः शौरिरमोघविक्रमः ।

विद्ध्वाच्छिनद्धर्म धनुः शिरोमणिं

सौभं च शत्रोर्गदया रुरोज ह ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

तम्—उस; शस्त्र—हथियारों की; पूगैः—झड़ी से; प्रहरन्तम्—आक्रमण करते हुए; ओजसा—बड़े ही बल से; शाल्वम्—शाल्व को; शरैः—बाणों से; शौरिः—कृष्ण ने; अमोघ—अचूक; विक्रमः—जिसका पराक्रम; विद्ध्वा—बेध कर; अच्छिनत्—उसने तोड़ दिया; वर्म—कवच; धनुः—धनुष; शिरः—शिर के; मणिम्—मणि को; सौभम्—सौभ-यान को; च—तथा; शत्रोः—अपने शत्रु के; गदया—अपनी गदा से; रुरोज—तोड़ दिया; ह—निस्सन्देह।

जब शाल्व बड़े वेग से उन पर अस्त्रों की झड़ी लगाये हुए था, तो अमोघ पराक्रम वाले भगवान् कृष्ण ने शाल्व पर अपने बाण छोड़े, जिससे वह घायल हो गया और उसका कवच, धनुष तथा मुकुट का मणि ध्वस्त हो गये। तब उन्होंने अपनी गदा से अपने शत्रु के सौभ-यान को छिन्न-भिन्न कर डाला।

तात्पर्य : श्रील प्रभुपाद लिखते हैं, “जब शाल्व ने सोचा कि कृष्ण उसके योगिक प्रदर्शन से विमोहित हो गये हैं, तो वह प्रोत्साहित हो उठा और अधिक शक्ति तथा बल से भगवान् पर अनेकानेक बाणों की वर्षा करने लगा। किन्तु शाल्व के उत्साह की तुलना अग्नि में तेजी से गिरने वाले पतंगों से की जा सकती है। भगवान् कृष्ण ने अपार शक्ति के साथ बाण फेंक कर शाल्व को घायल कर दिया, जिससे उसके कवच, धनुष तथा रत्नजटित मुकुट टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गये। कृष्ण की गदा के प्रहार से शाल्व का अद्भुत विमान चूर-चूर होकर समुद्र में गिर गया।”

शाल्व की नगण्य योगशक्ति कृष्ण को विमोहित नहीं कर सकी। इसी तथ्य को यहाँ पर जोर देते हुए दर्शाया गया है।

तत्कृष्णहस्तेरितया विचूर्णितं

पपात तोये गदया सहस्रधा ।

विसृज्य तद्भूतलमास्थितो गदा-

मुद्यम्य शाल्वोऽच्युतमभ्यगाद्दरुतम् ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

तत्—वह (सौभ); कृष्ण-हस्त—कृष्ण के हाथ से; ईरितया—घुमाया; विचूर्णितम्—चूर-चूर किया हुआ; पपात—गिर गया; तोये—जल में; गदया—गदा से; सहस्रधा—हजारों खण्डों में; विसृज्य—छोड़ कर; तत्—इस; भू-तलम्—पृथ्वी पर; आस्थितः—खड़ा हुआ; गदाम्—अपनी गदा; उद्यम्य—लेकर; शाल्वः—शाल्व ने; अच्युतम्—भगवान् कृष्ण पर; अभ्यगात्—आक्रमण किया; द्रुतम्—तेजी से।

भगवान् कृष्ण की गदा से हजारों खण्डों में चूर-चूर हुआ सौभ विमान समुद्र में गिर गया। शाल्व ने इसे छोड़ दिया और पृथ्वी पर खड़ा हो गया। उसने अपनी गदा उठाई और भगवान् अच्युत की ओर लपका।

आधावतः सगदं तस्य बाहुं

भल्लेन छित्त्वाथ रथाङ्गमद्भुतम् ।

वधाय शाल्वस्य लयार्कसन्निभं

बिभ्रद्बभौ सार्क इवोदयाचलः ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

आधावतः—उसकी ओर दौड़ता हुआ; स-गदम्—अपनी गदा लिए; तस्य—उसके; बाहुम्—बाहु को; भल्लेन—विशेष प्रकार के बाण से; छित्त्वा—काट कर; अथ—तब; रथ-अङ्गम्—अपने चक्र से; अद्भुतम्—अद्भुत; वधाय—मारने के लिए; शाल्वस्य—शाल्व के; लय—संहार के समय; अर्क—सूर्य; सन्निभम्—हूबहू; बिभ्रत्—पकड़े हुए; बभौ—चमकने लगा; स-अर्कः—सूर्य समेत; इव—मानो; उदय—सूर्योदय का; अचलः—पर्वत।

जब शाल्व उनकी ओर झपटा, तो भगवान् ने एक भाला छोड़ा और उसकी उस बाँह को काट लिया, जिसमें गदा पकड़ी थी। अन्त में शाल्व का वध करने का निश्चय करके भगवान् कृष्ण ने अपना सुदर्शन चक्र उठाया, जो ब्रह्माण्ड के प्रलय के समय दिखने वाले सूर्य जैसा लग रहा था। तेज से चमकते हुए भगवान् उदयाचल जैसे प्रतीत हो रहे थे, जो उदय होते सूर्य को धारण करता है।

जहार तेनैव शिरः सकुण्डलं

किरीटयुक्तं पुरुमायिनो हरिः ।

वज्रेण वृत्रस्य यथा पुरन्दरो

बभूव हाहेति वचस्तदा नृणाम् ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

जहार—काट लिया; तेन—इससे; एव—निस्सन्देह; शिरः—सिर; स—सहित; कुण्डलम्—कुण्डल; किरीट—मुकुट; युक्तम्—पहने हुए; पुरु—विस्तृत; मायिनः—जादू-शक्ति से युक्त; हरिः—भगवान् कृष्ण ने; वज्रेण—वज्र से; वृत्रस्य—वृत्रासुर का; यथा—जिस तरह; पुरन्दरः—इन्द्र ने; बभूव—उठा; हा-हा इति—हाय हाय, हाहाकार; वचः—ध्वनियाँ; तदा—तब; नृणाम्—(शाल्व के) मनुष्यों की।

भगवान् हरि ने अपने चक्र का इस्तेमाल करते हुए उस महान् जादूगर के सिर को कुण्डलों

तथा किरीट सहित विलग कर दिया, जिस तरह पुरन्दर ने वृत्रासुर के सिर काटने के लिए अपने वज्र का इस्तेमाल किया था। यह देखकर शाल्व के सारे अनुयायी “हाय हाय” कहकर चीत्कार उठे।

तस्मिन्निपतिते पापे सौभे च गदया हते ।
 नेदुर्दुन्दुभयो राजन्दिवि देवगणेरिताः ।
 सखीनामपचितिं कुर्वन्दन्तवक्रो रुषाभ्यगात् ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

तस्मिन्—उसके; निपतिते—गिरने पर; पापे—पापी; सौभे—सौभ-यान में; च—तथा; गदया—गदा से; हते—विनष्ट किये जाने पर; नेदुः—बज उठीं; दुन्दुभयः—दुन्दुभियाँ; राजन्—हे राजा (परीक्षित); दिवि—आकाश में; देव-गण—देवताओं का समूह; ईरिताः—खेलते हुए; सखीनाम्—मित्रों के लिए; अपचितिम्—बदला; कुर्वन्—लेने के विचार से; दन्तवक्रः—दन्तवक्र; रूषा—क्रोध से; अभ्यगात्—आगे दौड़ा।

अब पापी शाल्व के मृत हो जाने तथा उसके सौभ-यान के विनष्ट हो जाने से, देवताओं द्वारा बजाई गई दुन्दुभियों से आकाश गूँज उठा। तब अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने की इच्छा से दन्तवक्र ने बहुत कुपित होकर भगवान् पर आक्रमण कर दिया।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध के अन्तर्गत “भगवान् कृष्ण द्वारा शाल्व की बध” नामक सतहत्तरवें अध्याय के श्रील भक्तिसिद्धान्त स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।